- Title widales
- Accession No Title -
- Accession No -
- Folio No/ Pages 13×2-2
- Lines-
- Size
- Substance Paper -
- Script Devanagari
- Language Language
- Period -
- Beginning क्या कन्यव
- End-
- Colophon-
- Illustrations
- · Source -
- Subject AHANO
- Révisor -
- Author Apylo
- Remarks- 34 y c

मो मुखेषुदर्भे बुप्दद्यादवेत्रत्रस्थाम देशियुक्तवा सायतद् नम्द्रितम्प रेत। अप्रकामक गाउँ तत्र यमम्ति लेदिक राधाप्र याद शिषं राम् अर्ध प्रवासम्भितात्। द्वादिनावि र्निदाः सर्वे वा मस्तु तात्यम्। रगपि उंसितोप्ताविहीं। से प्रवंस्मरेत्। विरुव्या एत्रतासीयं नामे पात्रेष्रवि रणवारधात्रिमित्र एकं नेत्र तत्रमध्येष्ण केष्यक् । प्रदेश संच पंचा मान्द् धिर्भः पूर्व कर्बक त्रवय। कुर्ना च मासिक मासि सिपं री कर एत पारि।। रीमाध्यका रेच तुर्वित माध्यप्रयोगः। सम वृष्णे द्व कारे। चेद्र प्रकारे। य व विविधिना तीव मा द्विषितम्साम्य स्त्रप्राक्षेत्रमाद्वस्य व द्विष्टा तीव माद्वस्य व द्विष्टा तीव माद्वस्य व द्विष्टा काती पानु गता विकिथ द्वामाद रागा तथा विद्यामण न होते

वीर

क्मरेत। उत् देशंगत तो जंदर दाचार्त्र संगमित हु या ना प्रति ए वित्र सी प्रवता जावैषपी परेश्व । प्रवित्व नत पास्प्रामार्गेष्ठ वित्तरे घवानः।।। वास्प्राणिता हरवं कि वित्र ते नहित्र स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति क्षा वित्र वात्य वात्र वात्र वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्य वात्र वात्र वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात्य वात्र वात् न्धापं जा शिक्षं के शे इति का प्रतिकति दे रेताक वाश्या शाव के रोपं प्र र्ति द्रत्यंत्रमेवहिं॥१५॥वित्रित्यवाभूमियमं क्रंबमंस्मरेत॥द्रत्याप्राधा विकेम्याने प स्वापा सायचे नित्ताम् १९॥ स्वये निवे वन्ती मुन्दि संवते तती। गित्तित्व हिनी पंच पित्र नित्र में प्राप्ता में प्राप्त में प्त में प्राप्त में प्त में प्राप्त में प्त में प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प् त्रादक्षः । तद्या तत्रत्या तत्रत्यः पात्रात्य त्रीतिष्ठ प्रत्य पता श्वा अं प्रति हो त्रात्र पता भाग्य मिति वे के विते द चेत्र। जैंयमाय व्यक्ति दिति यं तद् वत्र प्राण्टा जैंवम क्रांचन प्राय सम्मान पत्ये न खागरता दी नं सिन क्राणि भूभो प्रति दार्गि कर्णा गाउँ का मादाप्रतिज्ञ साथिप्रमात्रप्रतिसम्बद्धाः साम् जित्र में विकर्तिसम्भा तथेग्यामार्थमात्रं तनस्तायं प्रविषयय गिर प्राया सम्भी स्मर्भ से भापया सप्तत्नात्रत्नात्र्यायमावधर्मगत्रायम्यदेवात्वायचा वैवस्वत्याया 

.月0

जी॰

त। जेंम् मूचेक अवादवाय स्थानम इति दिवाए स्था। जेंच मायानिय के स्वद्यात्रमाद्रिमध्य स्पाविवेद्वत्यात्रतेषुप्रमात्रीष्ट्रपत्रमेवाप्त्रण्या स्रातान्य प्रमातः॥ सर्वेत ताह्तान्य। प्रांग रेष्ट्र विः॥ क्रांग तिर्द भेव ति हर सागति मिति इया र मुस्तागति मिति नै स्त्री। गोप्रयो विस्पाया भूमोपीर्व वाम्रेय प्रविश्व पित्र हिए हसेन ईसिए पित्र जाने सरू रेव हैं होले प्रंच्निता विस्वादिका श्री हाल नुरं स्नातानितं ने होते हैं। म्यजीवमाद्वेदेवमाद्वापंत्वायद्विमंत्रवाएवसदादि तमाद्वार्यवित्र मंत्रपेत्।एक्षेक्षं मर्वत्रविविवित्रेतामादि त्रिविचर्वा प्राप्ता वेशका ध तेः शान परेः सत्तं व्यानारिनिः भवत्यं अविद्यानाना वित्राद्या वित जित्रेः। भिवत्यं भवित्रेत्रे त्त्रेत्राद्व कित्य कित्राभवत्ये प्रति प्रतिव च ते।। तत्र दं पां दे मिति पा दा मेप नीय विनी तः। स्व यूमेव ते का पादे प्र न्त्वेत्यात्रतः अविचेद्रिषवाद्यान्य स्मापत्रव्याप्य वाद्व प्रखांचारकेर चिरचार्णम्यात्मत्रात्रम्यात्रम्यात्रम्

जीव्र

11311

संशिवाजायते यतः। सेका र्यार्थम तो बिक्त मुची मीति चंद्वितः। राष्ट्रताधि कार रिताः। मतीय म स्यवा देशका तथ न माधा सव शापाँ के सिन जी थि वष्राद्रां तिमध्य पंसाद्धित सावित्तरम द्वार प्रवासिति तमरले वेत स्तिपुराला युक्त दाना विच पात्राक्ति द्वा क्तोपवास स्त्योद गंगक्ति प्रातः स्त्रानादि वित्यिक्ति गंगदि देशेन दर्भने विष्टा पात्रभी ज्ञान की प्रिपादारीत्वसुद्वध्रः कृश्चारिः प्राद्युरव्यति अपविश्वत लिखाउम्कोगाउस्याम्बदेवशर्म केजिव माद्रमहेकरिखाद्रमिन लणाउलमीशामादिष्ठा।स्थल उलावरमिनकल शंच द्रमदिलिनिव नकमत्यू र्व उंद्र गुक्त ने वित्रा वित्रा वित्र वित्र ख्रा स्व त्र वित्र तारमंहेम्बर्विष्यं विष्यं प्रयाक्षा का वा या परा देः। अं विष्ये विषयं इतिमंत्रेणमं पुरानद् जे ति नेपा उत्यो के पा कार्यो कर द दिणमध्य अमेल्सापस्य गः मतिलाः संस्वापावचात्रा ह्यापतारेः सं प्रवः। अं मा मापता वित्मते स्वयातम इति मंत्रे के न्य स्या विवद्वे

1.80

णक्रिण वस्तारिषास्त्रागाउदशुस्ता नुस्व पर्वसुपवपायना ननास को पार्या रिल्लागु कुपा वयर याता प्रत्या सनसभी येतिला तेले व श्रायवेश रणिया ना दीया न यहा न न हा चत्र मना दिने बरे वसाधि र ताषानित्नने ना सर्विषारी न माहरे प्राप्ति। त्र काक कः करारीन आद्वंतन वसायित आद्वरण वर्णक च्यीत श्राद्वयय्याणि वुर्रो का तस्मयो। नाना न हस्तने प्रा त्या मण भीदवता भयः चित्रभय स्त्रमदाण मिष्णावन नमः सा हेरोखधायानियमवनमानमः इतिमननिनेचना इम मन याद्वारातियाः विद्याने वित्रोते ततः वित्रोदेवा द्रथमा स

71

रहें इसिता पारदेश किन के कार केर केर केर केर की माना बाह्य माना रेंग की धाउस कि नैत्रिद्धात व्योगवरदारितावास्नणपार्या। पाराचिरद्यात। ननदरमा न्यमनीयितिवास्ते लाभ्यसाचमनायी जलाख्यनीय स्वयमणाचा मेत्।प र्वा निम्न ने ने त्र वा की यहा स्था ने स्व इति वक्त यो। प्रभाषी न स्वाक्त साह्य स्याने सामः न इति वास्न गास्त साचार स्वाचार स्वाचार यद्यविद्यन रजा नी पास्पति नयस वेस स्वाधिय धार्मिन प्रत्यं क वां के स्वागत प्रशा नत्रमवणद्यारियानमितिष्याषः।।पात्रभित्रभाणदाविस्वामा नत्रपासारियान वार्थे॥ ततः चारुस्यान गत्ता वन्यक्तर्स कपाक्त यत ५ जािभाषामाद्वाता वासामाना सामा पर्वमत्याना स्वा नि उपस्वप्या जारा धितिनयुपव प्राय ना देव वा स्नोणा पाड्य स्तापित

हमावादिष बदी द द्या जें स्रावादिय सन्नातः। अं उशंत स्वातिधी इसर्चद्वा। ने तावामद्रक्षेत्रव ने पार्व गर्दे का ताव स्वव व ति प्रक रे उन्मार्जध्या अंचादियाइतिपिष्ठया मेरिकारी मारापा जेलिय

जें

11411

वंवेतमः। इतिदेवर्वेत्रणानने वर्गिन्यान्य मान्य मान्य वासनंदे व कृत्राण भेषा द्यात्या माटक वृषमा सन वादाव । जो द्र द्यासनं वस्यः।।स्वद्यतिकात्ववद्या।ऽपरमास्वमादापाइदमासवसद्यः। मुधेन त्र त्र इपरं इ द्या सतं स्त्रीयः। स्व धे सु त्र ते ताते विकारे वान हमा बाहित वे वलाय लेय हु। जे मा वाहित म ज्या ते देव र्विष्णमंग्रहेगतीता। अविषेर्वातास्त्रागताः ष्रण्नामद्रमध्रतं मय विकेर्वाः ए एते मृथ्रतं वेमे वेभेनित से से या पदा विकास कि ते हैं या उपयोगित के रे वेस कि से या उपयोगित के रे वेस कि से या उपयोगित के रे वेस कि से या उपयोगित के रे वेस के रे वेस से या उपयोगित के रे वेस से या उप या वेस से या उपयोगित के रे वेस से या उपयोगित के रे वेस से या उप या वेस से या उपयोगित के रे वेस से या उपयोगित के रे वेस से या उप या वेस से या व 

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कित्याइतिष्द्वा जे क्रिके वित्व द्वानः क्रिका पात्र स्व देवा पा द्विष्ट्यं पिम विधिना कु स्यात् । जैन जैने तत्व सवाह ना प्रवाहा । जैने माय चित्र मने मारा इतित्रं ज्ञाच्याव स्व स्वाह स्वाह स्व व त्राह स्व व त्र हे व त्र है त्र है व त्र है त्र है व पानकेनेण वस्तारिपाने वृद्दात्।।तसः उस्मानम् भीततानिस्म स्ति। मयाजनाव पानम विविधान धुन विधा संगीत ने सादि असामध्य प्रधा मत्नवाभिनं व्यागतादेवपात्रमात्र्या । विवीनेपात्रमितित्रका अं इदिल्किन अमेरिय उचार्य हो लोग र मन विक्र सिन्द न मद्म वृतिम ने प्रमित्रा पद्मित तेला इदमा द्राईति हमें इद्वितितिपुन र्ने विवेषा अंच वासीतियवाविकी के। अंविदेवदेवाहान द्वान्ते नापकर एक माइ सुसर माप कि कि रहे हैं। मिन्न कि हार हार है कि मिन मिन कि है कि कि हैं। तिण ग्रह मंत्र रहम मार्च कि वेषप् । अंत्र प्रताह सादि ता के ति ता कि मचढमवइदमवं सापवरशंड्याभाष्य संदेश सुम्मा एवमेव सद्भी

of the

E

वसवः एणवार्यः स्वदीनिवित्रक्षरेम् र्यद्यात्। एवमे वसद्यः स्थिभोपितन वामाद पात्। वामावार दे। वर्ष ए हमेन घता ईपात्रेण दें। देयः। इस विष नः । स्र वेस्व व द वा भावे तसमवे तय ता भावा त्या त्र स्व विषेत् वा भावे । । । ते वे वेदे वा पार्व ते प्रचार प्रचार प्रचार ता विके देवा पार्व ते प्रचार प्रचार प्रचार प्रचार ता विके व वा प्रचार ता विके प्रचार प्रचार प्रचार प्रचार ता विक प्रचार प्रचार ता विक प्रचार प्रचार ता विक प्रचार के ते । । ते ते स्व प्रचार के विक प्रचार के ते । । ते ते स्व प्रचार के विक प्रचार के ते । । ते ते स्व प्रचार के विक के व धः॥इदं वामा स्मी सादि अमेर प्रसेक् वृति ए भा प्रतिपाद वेत् । विष्य संशिरवा व संवधा काम त्रावम र एवं ता त्या ना पवी ता भर शं शा का दी मु तम द सालि व फ लार्षि तमारे पाति॥ व सुभ्य स्वा म संविष्ठ भा त या मि । उने के द्रभ्य स्वाम संविष्ठ भा वे जो त्रिंग में कि भ्य सवा म से विष्ठ भा त वा ति । द्रित् य दा ब्राल्यों का। नने बीवान वृद्धि क्रियाण नवे स्पिता मंत्र लाकि क्रां। मण संत्र नार वित्र ने स्त्र क्रां क्रां के स्वार कार ग्रामा गर्द्ध साथी

तमाः माइतिरक्षात्राः याइति नैन ने जो पि उत्तरिया इस ने क्रम हो तत्र तात्र वात्र का क्रिया क्रम है हो वत्र के वे वे ला कारं वा दिन प्रति च न व ते न ते न ति है ते में कारं व स्वादि न पि उदा ना च स्थानं निर्मायतम् य देश बाम ह साग्र ही तप्य पिन्त स्वी व अंभ्रपहतासम्बाइतिमंत्रेश्यक्री पराहीतपरिशहसी वद दिण्णगारे रवास्त्र प्रितवास्त्र वेरे रवापर भा मिष्ता परिण्ति प्यात्। विरिध्वासीत्म् साम्यान्य वात्। तते देवता भारति र्जण्या मति व उत्पद्धे मार का प्रिचापाय वित्र ति र्वत्य व रोध्न रेव निर्दानवा अंत्र दाव नव म् त्राव ने ने विष्ण प्राय नव दिते के शास्त्र में स्वार ने विष्ण प्राय ने विष्ण प्रा

योषिवद्ववनाततत्रत्रामा ३ हे माति ते इत्ते विति पठ्या। ते वधि विवि वित्र विति पठ्या। ते वधि विवि वित्र विति पठ्या। ते वधि विवि वित्र विति वित्र व नंद्याताति च वा स्वयमारि नियम वतः। जे कार प्रंति भेजीर वा माह्र के ती ते खपत ता आ दित वप् वित्त पूर्ण वा सापती जी सक् दान येता। नतः निव त्रपाल दे में खा मीवः।। उपप्रवाता इति सर्व मध्मध्म दितार हो प्रीः। के ए) खया तथा इसा पा अन्य-।। जें तमस्य विक्या द्वयसे वेस वस् वा तत्रः पिवास हिसाय व तह साय वेत्र मः ।। इति वढ्नाग्नु, मिनिक्रे र की र्व वस्वादि द्वत पाक् सिल् न ध्याचे तथा जे उद्धिताइ महिच उरोत। स्थत प्राय मा बा अंधि ए से द्वारा वा स तरहण यक्षात्र या स्विमे के स्व सर्व प्रकार यत् मुस्य स्वति लोकी कृत्य मारकतिल जलानित द वं चादाय। वं मिनि द उधा इति में रे ए विक रेत्याततः सारम्ब स्रिक्ट तात्रात्राची भी उत्तरं द्वं पता गांत्री

MCH

जीन

द्वा नी वी विसं साच मा डें निया वे भित्र ते र साय इति के व ला नी पित एं नमसारः।ग्रहाद्यादिनाधित्यः मुक्तः।प्रचन्निनिनागः तत्र हैं ति तरे वास इति मं इपि हो वे विद्या वे स्टावे तत्र हैं से ति हैं वित्र हैं व्यय्क्रदेति जेन्नद्यक्तार्त्वाकाष्ट्रवार्ति जेन्नद्यक्तार नदा साय वाया सदे। स्वातातति जो परिस्तर रूप खेत उस्र देश वं साम हे का मंदिय जमान ताम वाप द्यान । त ता व का दि बाह्म एं ना चा मेता ततः सत बात्रे व बात्रे ए ना दिए करे विवासापः मेतिने जले से मनस्य मनिकित्य बाणि मनते जारे ए मनिवास ने में ब को सीति वजा स्वासन व या ने भे वे प्रति त व ने जो मदाव स्नो दे ते दे ने द व पा नादि केन्न प्राप्त केन्द्र केन्द्र

Ano

11C)

क्रध्वा यित हा तं के तत महतं मर्व में का उपात्र का व स्वादि भीवि वोषमाव तीमें त्र विमित्र प्रियमध्य ताभागित धार्य मिलान म यापग्रतित पर्वणातमान वसादिभः प्रमेकं सीय सीया वने उनस्या नेप्रात्। मेरकितिलालिकितं विद्वारम्। अंत्रय्वमव द स्युव्य भ्येषि दः स्वर्धित क्षाय्ते हेप्त वार्षित मादाव। अंतर्म प्रा एवण्यान्व विदः क्रिक्षणम् द्वाति विषेत्र चारावा तेत्र विद्वार ध्विमितिपि हिता वा मावतं क्री द प्रास्ती स्व म्हा संक्रिय माते ने वयणा वरा ब स्था अभू भी मद्ति पित्रे वर्षा भाग माव व्यक्ति वर्ष दिन स्व मात्रे व प्राप्ता

利。平10

9

नानेविषद्वान्त्रीभ्याष्ट्राव्यायवात्यान्यत्यान्यः पिद्वाद्याद्वार्षान्यवद्गी मिन्निषद्यावाधनाविषद्व ब्रह्मणभ्या। उन्निष्य हतेन इस्वादिम द्वागस्तविमेद्देव महसागतासिद्वा चितिलपूरि नकास्वयाचे सदिविणमनुका नकास्वया व्राह्मरणभ्यामदेदद इत्युत्स्त्र्यनाज्याप्रतिपाद्येत्। हासीतिनाभ्यामुक्ते॥ननअनरस्या होते। हे इपका रापस्करं जल हे नं वस्यानी य ब्रह्मरण यप्रानिप देवत्। दोन्एस्यमम्बद्धवंता। तद्स्यानीय वाद्मएगयप्रीन पाद्वत्। मह्यस्या वना दृश्यकात् यास्यानी व वास्त्रणाव ष्रतिपाद्यत्।विम्वदेवाप्रीयतामितदेव ब्राह्मरोगेबा विष वस्वाधिवस्यान्ययंतित्वर्द्धन्ययंग्रहेग्यतितागदीः

、农村

मनाः कृतानित्रिंगार्श्यप्यम्। वस्वाव्यस्ति सारिया ग्हीयात् डोन्प्रद्याराः पितरः संचिति वदत् संचितितेसते डो मांबेनावर्द्व तादातारे नाभवर्द्ध तावदाः स्तिने रेवच महाच नामाय गमद्द देवचना स्विति स्नेचचना वद्व यस दिन ची घल से मिद्याचनारस्त्रनः सनुमाचयाचिक्यकाचेनः एनाः सन्यारिष्ठः स्वितिबद्त्।संवितितेस्ते।विडोपरिसपविचनुपानासीधि स्वधावाचिषेष्ठाइत्युतेगवाद्यतातित्युत्तेः। वित्रभ्यः वितामद्रेभ्यो। बद्वितामद्भेगामानामद्ग्यः। प्रमातामद्भेयो बद्वप्रमानामद्भेय श्वस्वद्याच्यनोभित्वद्रत्। जप्रस्वद्यतिनेक् ने। स्वविवद्भीनदि निषद्वापरि। अं ने ने वह निष्य योभिष्वं वेत्। न नः स्वस्थानिष्य

तेषक्ष ने ए विनर्जनेत अं वाजेवाजे इति अवता तत्स थे वदेव बाहाए न विमर्ज यह । तत्सा विद्रास्थ ताता प्रद्रिणी कर्वन अंभा मा वाज स्पष्न वे वाज स्पष्ट में वा वाज स्पष्ट में वा वाज स्पष्ट में वा वापित विक्रा माने वा वाज स्पष्ट में वा वापित विक्रा माने वा वापित वा माने वा वाम में केष्वाराण विस्ताना हित्यंते ल सीमा तमहो वापदा का व का अ मणवा उधि छा ज न य ने से उ प्रतिपति ज ना दि। प्र ने पण र प्रति न ना द सोपादाप्रतात्मात्या । जेविमातात्मा चेमरात्रं सारत् त्यस स्वस्पानंगध्य स्तापु ब्वा असिना छित्र मिहित्य भित्र ने ब्राह्मित यो द वास्वयं पार एक ता । रात्रों संस्था वं द ना दि क्रंय क्र ना काम के तेशा ना विशे के ए ना राय एक र ना च या शक्ति जा गर एं के या न ॥इति वयोदशी क्रात्माच नुद्रमापानः स्वादिपंच पर्मनिर्वर्वित्व

जी •

ह्मलग्रामहर्वद्वारे के वरे करियः। प्राष्ट्रिये वर्षे रित के वर्षे पवान्य सामित्र ते अविश्व अति हे ने पुत्र रीक सनम सिविष्वभा वस्यमम्मा अवी केशमहा प्रवादित स्वादित तदाक्षेत्रत्त्वाष्ठियषाक्षेभवंगद्दत्। तत्रभिष्ठद्विष्ठि मुखः। स्मातं त्राक्षेकानिं वासपंत्रत्वात्वावियर्भकानं नेवियनेव र्लक हारावितावि मी पायि स्माता विस्थि वृत्ता पाय समाववहा साः कर्नयः। स्वतानो तेष्र लि द्वांते हो मे क्या किरिय के न या प्रधा ने हो न स्याने भे मैप प्रमाय र द्राय प्र ए वा दिस्वा हो ने संस्कृतों मे ना हित वयं हवा। वं वा पान शेः क्र नं व द्वा तो ना मनदेत मात्र प्रतिक्रिम् मेन पित क्षित्र क्षा परा दे प्रयक्ष य चा देर केतिक निया ने पाधी में के दा ह यता। विच्य मान स्मा ना जिस्सु खा में व दिनि वि शेषः ततः स्प लाते र

देमाध्यतिन गुराणिक इवत्यंत्रे । से विष्यतिन ग्रेस्त्य के ते मानद्रतं जी वा जी व का का नित्र के कि के का का के लिय प्रयवा यः । तिस्म का ते प्रवादी ना अक्त प्रवाद के प्रया के पाता का का का कि का कि का का कि वसंवत्तर्यापु उसर् का जा ते व सिव द वर्गा कं नवे जा ता साम व ब्राम विश्व स्व वर्ण ने वर्ण वस्त्र मर ले द हमा द द से में विक सः। श्रे का स्व में का स्वाग एवं का वं श्रे वा द्वा विव से द का दा की व युक्त निह्न विष्य के त्याः। हिमाद्र छति हिंग पुरा लेखा या वर्गी यप्रकार पार् ने दाना कित्य तरवा दा चित्र का निवित्त विते चत्रा तस्यों ने दिमादि ते। उत मंत्रवः। म्यालस्मी धर्भ दृष्टत्र शास्त्रीयप्रयागएविव वृद्दति। । सप्य अल्पेन पाना विशिष्ट न वाचा अल्पेन प्रविद्यामी प्राणते पत वाचवा॥देवदेवाह् जी के शः सर्व मः सर्व भारतः।।।। तत्रंभवर

原原院

बाष्यत्वर्गितानाना तं । यह गर्भ में बेस्न ग्रा के दें। के समित्र में सित्र सम्मान के सित्र सम्मान सित्र सम्मान के सित्र समान सित्र मिनंदियात्रेण धनंदीर्च नन्तरिया अवावितः सम्भनं से बासुर्व जतेष्वर्भित्र के प्रति विषयित्र में विषयित्र के विषयित्र विषयित्र विषयित्र विषयित्र विषयित्र विषयित्र विषयित्र के के नाटा अस्त के स्वास्त्र के प्रजातिंद् उत्रधे ने सबसका सिन्व सुधः लोग बीन्रा जातिय त्तरः दाद्वाद्वित्रावरा तेद्रवीय के त्रवावनः म्बी सारंग विभूषितः दे। उत्हरण वी उगद्यां मी तिचाचा कि स- माचित्र तप्रतिपा यता ही राज्य यतः परंग कल शं सुवर्ण र जन यो। र त्राविधाव्यवित्तामा मावित्वप्र वित्र वित्र नित्र र जनम्

एकेकिये उन सर्रिक्ते भेगिन द्यायना भिमाने न लेग त्याएकेके जलम ह्ये दिये त्या ततः एके कं जल दूर्य के भेजपानम खारा वने के के चितिलान ला जिलितियं पंच पंचा प्राच्यां जला जला यञ्च वे तरहर दितना मगात्राध्याते। यया अति या जात्व द्वात् तते। यह मागत्यसाय गर्हाराषातिविकायकारे॥पात्रद्वयेत्रातेश क्रीरंत्रलेच प्रदिष्य भीवात्रसाद्वीतिमलपानेनिवदयत्। मीवेबदुरधियेतिदुरधपाने जनवर ये त्राज्ञ वसार्विमालको ने ति सामित विपनि व दर्शनात् राजादि हाणाग्रद्भेषु उद्झरवः रवषे त्राष्ट्रातरा द्यामाष्ट्र विधानादेव राजमशोचित्रितवदं ति। शतिच तुर्दशी देत्यापानर मावस्थायाम् देशाद् वंनतं रस्वात्वाविष्रादिनामेरण वार्थायुष्टाप्र

जी॰ प्रा॰

तोदवही:स्ट्याः वद्यादास्त्रिम् विमृद्धित्वा। जामचादके ना विष्यस्पि उसी हाराखपं वापा कमार भेता पात्रेः पा के करे शा पादि पं व कं दा वा कु शित सामाम दादि छा उरामाद्वा महं सरि छे। जें म दा बा उरामाद्वा न ज ता यम् द्रमद् किर छे।। एका द्रशमा साथ तरे उद्यक्त मा संभवे छे। उशपद स्वाजेसप्रद शपदंत्रवा जंग एव मेव मास का दा विष्ण क व्यक्।मित्रायः कार्यः।।माय्माद्वीयिवं उसमीवेक व्रयं राता वृ मासद्धि भिः। इर येत्याइ ति विशेषः। सम्मन्तर्भ च षा पा दा वं का वत्र वत्र व बदानं हि तदं पती पूजनं हु को तारी मा च मा हा दि बाउश मा हा ति प्रतत्य स्वतं साविष्य रले तर येव प्रेत्य से स्वतं स्वत

भिक्षां का का मान्य के मान के विवापं क्रांता। त्रे सित्र प्रक्रास प्रक्रिय प्रक्रिय विवास प्रक्रिय विवास विव भिद्याचीत्र तार वेत्या नद्कि समीने कर्तित्र यं का तात्र से के पुरस्ति र स्ती दक्षेः प्रवेत्। तस्मित्र प्रति मित्र प्रति नाति नीतिक नि। जेंच य से समस्य नियमे से के भूमिति वे पात्र विमाय समस्य नियम से नाय से विमाय से दीवंद्रिकितिदाहमिं जिल्ला निमादबहित प्राधेम् भे हल मः।। इतिप्रमत्तीयमञ्जूने भनतेन विवापयेत्। ततः स्राताम तमः क्षेत्राह्मस्त्र यात्रमः खेद्दाह्म स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापति सद्याः धार्तमः अविवस्ततायं तमः अवालायस्थ्यतमः अभ्यत्रमहर्णा अध्मर्मायस्थानम् ग्रेम्यवस्थानमः १२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्री°मा० ११

पख्छानमः॥ इति प्रत्यक्षेत्रेकेकं स्ति लंजलं जित्र ता॥ विद्यराग त्यां डोन में सद्य खर्या नय तथेन यं । । इति में ने रामि लाद के पूर्ण कुं भभिविविकरे स्। तती सूक्षेदिक्षण गुकुरा चयमा सीर्य। उा मुक वाद्वायसद्ययस्वद्यानमः॥इतिमेत्रेएसद्स्यरम्। ज्ञांभूम्भगात्रा ऽ सक्त में ने तिने तिने दें ने स्थान स्थिति। तिने दें कार से दें भी परि प्राचीराचीती प्रतितवामजानुई द्यात्।ततः पूर्व कृतचरुद्धभ्या प्रत्ये के ये चे विति द्रापि डा विमाय मरे लाविर यद्रापि उद्यो निसर्नेयानयाष्ट्रेन रायस्त्रवर दितन याद्र रिपंडान्द्रन्या पु त्येक् अधिगध्य द्वा दी वं ने वे खंद वा । सर्वे सा मन्यो स्विति व यात् ततः प्रसन्वद्निकास्तरत् पिंग्नाद्यो स्मिणिनिदन

53

तीव

त्रमास्य मुं वर्ण तिल्पा ने पार्त मान्य मेरा मुक्त राय मानित शकीर पात पाषि त प्रशास दंता त मुक्ता पत्र स्व त स्व पत्र दर्भ रोप्र विनक्षेत्र स्वाहा स्वाहित स्वाह यमंत्रयाषु इंश्वत्व मा ईत्यव ती न प्रयास्य नाः हस्त र्णयं निम्याव वित्राच वित्र वित्र वित्र पात्र ति स्वाव वित्र पात्र पात्र वित्र पात्र पात्र वित्र पात्र पात्र वित्र पात्र सुनित्यम् मेनविधिना द इसिर्दे से मेने स्थानित महादान वाद्वाति पाष्ट्रयायितमानवः सर्वपाप विनिर्भ नाः वितरं सिवता महा दो तार वे ता मुनी देह ती रहा ते प्रमुक्त नरः प्रमुग्द्रातिविधिवनस्गचेति धाक्ने १ - वत्रदेश

खन हरते। ति त्वा वर्ण ता ममयते। दिशेषा वस्य का स्वमयते। वा वा वर्षे दे के दा दी कि प्राण दे शेषित्र गुषतं मुवलियाः पद्मीपवीतं शिदः स्वाते स्वापं येत् व सोपिन् तु चीरोन ये न व कार्या कि वित्य करे हिले यत्मया न वी न कामन वा ज्ञीति येदि या येच मान, स्थारी राता ग्यानवा धाप्रामः मार्वकित्वः । त्लभवित्ता पात्रहेषे के वश्त यः।इतिविष्युधर्मेन्नरेजलयेनुपाने। सीर्थनः प्रकारः। प्र निल्ते मति एके जायेवन ने रा न्या जात मं मान्या ने न कुरा नासी रिसर्वतः शतस्यावितमहाराज्यमे तुक्ताज्ञं वुद्धः ते वो परी के उति का जानपत्र का नाम विश्व सीर के भान तः स्वाव स गुर्पा के ब स के। मुख ए मुख स मारिश्च द बा मुक्का ब साई।